Toppersnotes®
Unleash the topper in you

बिहार

फॉरेस्ट रेंज ऑफिसर (FRO)

बिहार पुलिस अधीनस्थ सेवा आयोग (BPSSC)

भाग - 4

बिहार का सामान्य ज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	बिहार की भू–आकृतिक विशेषताएँ	1
2	बिहार की जलवायु और मिट्टी	12
3	अपवाह तंत्र	16
4	बिहार की वनस्पति और जीव–जंतु	25
5	कृषि और संबद्ध क्षेत्र	32
6	सिंचाई	44
7	उद्योग	50
8	परिवहन एवं संचार	61
9	खनिज और ऊर्जा संसाधन	74
10	जनसंख्या और अधिवास	84
11	बिहार और प्रारंभिक ब्रिटिश काल	91
12	बिहार में उपनिवेशवाद और जनजातीय विद्रोह	95
13	बिहार में राष्ट्रवाद	97
14	बिहार की कला और शिल्प	106
15	बिहार में संगीत और नृत्य	113
16	बिहार के मेले और त्योहार	119
17	बिहार में भाषा और साहित्य	124
18	बिहार की प्रमुख जनजातियाँ	132
19	बिहार की प्रसिद्ध हस्तियाँ	140
20	बिहार में पर्यटन	144
21	बिहार राजनीतिक व्यवस्था	156
22	बिहार के राज्यपाल	161
23	बिहार के मुख्यमंत्री	165

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	बिहार मंत्रिपरिषद	167
25	बिहार न्यायपालिका	169
26	बिहार के संवैधानिक और गैर–संवैधानिक निकाय	174
27	बिहार की प्रशासनिक संरचना	176
28	स्थानीय स्वशासन	180
29	खेल एवं संबंधित पुरस्कार	184
30	बिहार बजट 2026–27	190

1 अध्याय
बिहार की भू-आकृतिक विशेषताएँ

बिहार की स्थलाकृति मुख्य रूप से नदियों द्वारा निर्मित हुई है। बिहार की भूगर्भीय संरचना उत्तर में नवीन और दक्षिण में प्राचीन है। धारवाड़ चट्टानें सबसे पुरानी हैं, जबकि चतुर्थक (क्वाटरनरी) चट्टानें सबसे नवीन हैं। स्थलाकृतिक रूप से, बिहार के उत्तर-पश्चिम में तराई, केंद्र में गंगा का मैदान और दक्षिणी क्षेत्र में पठार स्थित है।

बिहार की भूगर्भीय संरचना

सामान्य अवलोकन:

- **बिहार का भूविज्ञान:** बिहार के भूविज्ञान में **पुरानी** और **नई** दोनों प्रकार की **चट्टानों की संरचनाएँ** शामिल हैं। **उत्तर-पश्चिमी पहाड़ियों** का निर्माण **टर्शियरी काल** के दौरान हुआ था। हिमालय से **नदियों के निक्षेपण** ने **बिहार के मैदान** का निर्माण किया, जो समयावधि के अनुसार **सबसे नवीन चट्टानी संरचना** है।
- **बिहार का निर्माण:** बिहार का निर्माण **नवनिर्मित हिमालय** की दक्षिणी ढलानों से तेजी से बहने वाली नदियों द्वारा लाए गए **मलबे** (detritus - चट्टानों के ढीले टुकड़े) के एक **विशाल गर्त** में निक्षेपण से हुआ था।
- **निर्माण की अवधि:** बिहार की चट्टानी संरचनाएँ **प्री-कैम्ब्रियन काल** से लेकर **प्लीस्टोसिन काल** की **क्वाटरनरी चट्टानों** तक फैली हुई हैं।
- **क्षेत्रीय भूविज्ञान:** बिहार का **उत्तरी भाग क्वाटरनरी चट्टान काल** से संबंधित है, जबकि **उत्तर चंपारण टर्शियरी चट्टान काल** से जुड़ा है। बिहार के **रोहतास** और **औरंगाबाद** जिले **विंध्यन चट्टान काल** से संबंधित हैं।

संरचना के आधार पर बिहार में चट्टानों के प्रकार

1. धारवाड़ चट्टानें

- ✓ **आयु:** धारवाड़ चट्टानें बिहार की **सबसे पुरानी** चट्टानों में से हैं, जिनका निर्माण **प्री-कैम्ब्रियन युग** में हुआ था।
- ✓ **संरचना:** ये चट्टानें मोटी, मध्यम और बारीक बनावट वाली होती हैं। इनमें **आर्कियन अवसाद** जैसे **क्वार्टजाइट, फाइलाइट, नीस, शिस्ट और स्लेट** शामिल हैं।
- ✓ **स्थान:** ये चट्टानें बिहार के **दक्षिण-पूर्वी भाग** में पाई जाती हैं, जिनमें **मुंगेर, जमुई, नवादा, गया और नालंदा** जैसे जिले शामिल हैं।
- ✓ **प्रधानता:** धारवाड़ चट्टानें मुख्य रूप से **अभ्रक-शिस्ट** से बनी हैं, जो एक प्रकार की रूपांतरित चट्टान है।
- ✓ इन क्षेत्रों में पाई जाने वाली पहाड़ियाँ **छोटा नागपुर पठार** का हिस्सा हैं।
- ✓ ये चट्टानें आयु में **आर्कियन चट्टानों** के समतुल्य हैं।

2. विंध्यन चट्टानें

- ✓ **आयु:** विंध्यन चट्टानों का निर्माण धारवाड़ चट्टानों के समान ही **प्री-कैम्ब्रियन काल** के दौरान हुआ था।
- ✓ **संरचना:** ये चट्टानें **चुना पत्थर और पायराइट्स** से भरपूर हैं, जिनका उपयोग **सीमेंट उद्योग** और सल्फर उत्पादन में किया जाता है।
- ✓ **स्थान: सोन नदी घाटी** में विंध्यन चट्टानों के ऊपर जलोढ़ निक्षेप पाए जाते हैं।

विंध्यन चट्टानों के उपसमूह:

- ✓ विंध्यन चट्टान समूह को दो भागों में विभाजित किया गया है:
  - **निम्न विंध्यन समूह**
  - **ऊपरी विंध्यन समूह**

सांस्कृतिक और औद्योगिक महत्व:

- ✓ इन चट्टानों का उपयोग कई **ऐतिहासिक स्मारकों** के निर्माण में किया गया है, जिनमें शामिल हैं:
  - **मनेर दरगाह, सासाराम, आगरा, दिल्ली, जयपुर, सारनाथ, सांची** और अन्य बौद्ध स्तूप।

ToppersNotes Unleash the topper in you

- ✓ **ज्वालामुखी संरचनाएं: औरंगाबाद** जिले के **नबीनगर** क्षेत्र में ज्वालामुखी गतिविधि के प्रमाण मिले हैं।

भूगर्भीय विशेषताएं:

- ✓ ये चट्टानें **क्षैतिज रूप से परतदार अवसादी चट्टानें** हैं जैसे:
  - **बलुआ पत्थर, क्वार्टजाइट, चूना पत्थर, डोलोमाइट और शेल।**
- ✓ इस प्रणाली का एक बड़ा हिस्सा **कैमूर श्रृंखला** द्वारा दर्शाया गया है, जो निर्माण और भवन निर्माण कार्यों के लिए महत्वपूर्ण है।
- ✓ **विभाजक रेखा:** विंध्यन चट्टानें **गंगा के मैदान** और **दक्कन के पठार** के बीच एक विभाजक रेखा बनाती हैं। ये बिहार के **दक्षिण-पश्चिमी भाग** तक सीमित हैं, विशेष रूप से **कैमूर जिले** और रोहतास जिले में **सोन नदी घाटी** के बीच।

3. **टर्शियरी चट्टानें**

निर्माण और विशेषताएं:

- ✓ **निर्माण काल: टर्शियरी काल** के दौरान यूरेशियन प्लेट और भारतीय प्लेट के बीच टकराव के कारण **टेथिस सागर** में जमा अवसादों के ऊपर उठने से **हिमालय** का निर्माण हुआ था।
- ✓ **स्थान:** ये चट्टानें बिहार के **हिमालयी तराई क्षेत्र** और **शिवालिक पहाड़ियों** में पाई जाती हैं।
- ✓ **निर्माण अवधि:** इन चट्टानों का निर्माण **मेसोजोइक युग, मायोसिन युग और पेलियोसीन युग** में हुआ था।
- ✓ **बिहार में स्थान:** ये **रामनगर दून** और **सोमेश्वर पहाड़ियों** में पाई जाती हैं जो **पश्चिम चंपारण** जिले के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित हैं।
- ✓ **उदाहरण:** इन चट्टानों में **बलुआ पत्थर, बोल्डर क्ले (कंकड़ युक्त मिट्टी) और कांग्लोमेरेट** शामिल हैं।
- ✓ **निक्षेप:** इन चट्टानों में **पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस** के भंडार भी हैं, जो **टेथिस सागर** के अवसादों से बने हैं।

4. **क्वाटरनरी चट्टानें**

निर्माण और विशेषताएं:

- ✓ **निर्माण काल:** ये चट्टानें **प्लीस्टोसीन** और **नवीन काल** के दौरान बनी थी।
- ✓ **स्थान:** शिवालिक पहाड़ियों के ऊपर उठने के बाद, हिमालय और छोटा नागपुर पठार के बीच के निचले हिस्से में और **सिंधु-गंगा क्षेत्र** में **जलोढ़** मृदा जमा हो गई।
- ✓ **संरचना:** ये चट्टानें **बलुआ पत्थर, जलोढ़, कांग्लोमेरेट, मोटी बजरी** आदि से बनी हैं।
- ✓ **बिहार के मैदान:** ये चट्टानें **बिहार के मैदान** का निर्माण करती हैं और नदियों द्वारा लाए गए अवसादों के जमाव से बनी हैं जिसे बिहार का मैदान कहा जाता है।
- ✓ **गहराई:** इस मैदान में जलोढ़ की गहराई लगभग **6000 मीटर** है। जलोढ़ की सर्वाधिक गहराई **पटना जिले** के आसपास के हिस्सों में पाई जाती है।

जलोढ़ के प्रकार:

- ✓ **बांगर:** पुराने जलोढ़ में **मोटे कण, रेत और कैल्शियम कार्बोनेट** होते हैं। यह ऊंचे स्थानों पर स्थित होता है और यहाँ बाढ़ आने की संभावना कम होती है।
- ✓ **खादर:** नए जलोढ़ में **रेत और गाद** होती है। यह निचले हिस्सों में स्थित होता है और **यहाँ बार-बार बाढ़** आती है।

बिहार का भौगोलिक विभाजन

किसी स्थान की भौगोलिक संरचना काफी हद तक उस क्षेत्र विशेष की जलवायु, मृदा, वनस्पति और भूमि उपयोग पर निर्भर करती है। बिहार का क्षेत्रीय अध्ययन भी इसकी विविध स्थलाकृति, प्राकृतिक विशेषताओं, मिट्टी, भूमि और वनस्पति पर आधारित है। भौतिक और संरचनात्मक स्थितियों के आधार पर, बिहार को तीन भौगोलिक इकाइयों में विभाजित किया जा सकता है।

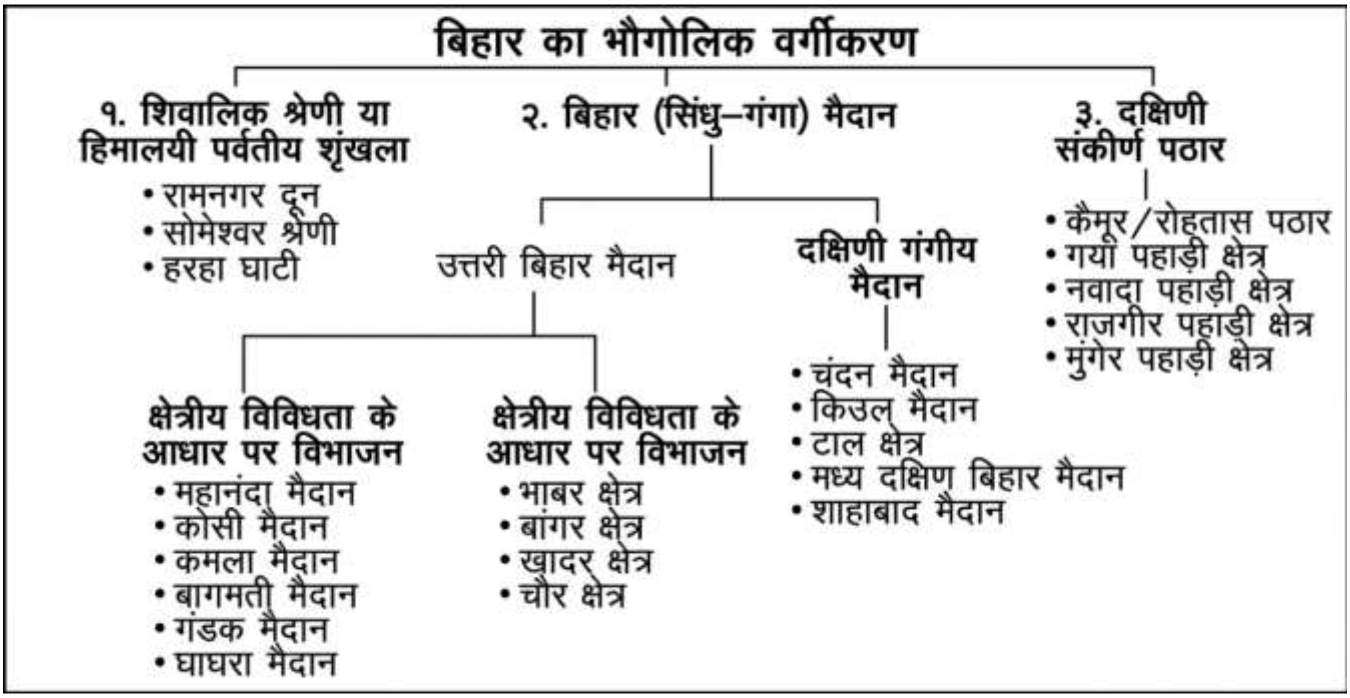

A. शिवालिक श्रेणी :

शिवालिक श्रेणी हिमालय पर्वत का एक हिस्सा है और लगभग **932 वर्ग किलोमीटर** के क्षेत्र को कवर करती है। यह बिहार के **पश्चिम चंपारण** जिले के **उत्तर-पश्चिमी भाग** में स्थित है। स्थानीय विविधताओं के आधार पर इस श्रेणी को तीन भागों में विभाजित किया गया है।

i. रामनगर दून

- ✓ **स्थान:** यह **सोमेश्वर पहाड़ियों** के दक्षिणी भाग में स्थित है।
- ✓ **विस्तार:** यह श्रेणी **32 किमी लंबी** और **6-8 किमी चौड़ी** है।
- ✓ **ऊंचाई:** इस श्रेणी का उच्चतम बिंदु **संतपुर** (242 मीटर) के पास है।
- ✓ **विशेषताएं:** रामनगर दून के उत्तर-पूर्व में **हरहा नदी** स्थित है। यह श्रेणी **214 वर्ग किलोमीटर** में फैली कई छोटी पहाड़ियों से बनी है।

ii. सोमेश्वर श्रेणी

- ✓ **निर्माण:** इन पहाड़ियों का निर्माण **टर्शियरी काल** के दौरान हुआ था।
- ✓ **स्थान:** यह बिहार के उत्तर-पश्चिमी भाग को घेरते हुए, **उत्तरी गंगा के मैदान** में पाई जाती है।
- ✓ **विस्तार:** यह **70 किमी लंबी** और **84 किमी चौड़ी** है, जिसकी औसत ऊंचाई **450 मीटर** से अधिक है।
- ✓ **विशेषताएं:** बिहार की सबसे ऊंची चोटी, **सोमेश्वर किला (880 मीटर)**, यहीं स्थित है। **त्रिवेणी नहर** यहीं से शुरू होती है और **तुरीपानी, कूदी और हरहा** जैसी नदियों द्वारा **सोमेश्वर, भिखना ठोरी और मरवत** जैसे कई दर्रे बनाए गए हैं।

iii. हरहा घाटी

- ✓ **स्थान:** यह **सोमेश्वर और रामनगर श्रेणियों** के बीच स्थित है।
- ✓ **आकार:** यह घाटी **21 किमी लंबी** और **152 मीटर ऊंची** है, जो **214 वर्ग किलोमीटर** के क्षेत्र में फैली हुई है।
- ✓ **विशेषताएं:** इस घाटी की अधिकतम ऊंचाई लगभग **240 मीटर** है और यह गंगा के जलोढ़ मैदान से ऊंची है। इसे **'दून घाटी'** भी कहा जाता है।

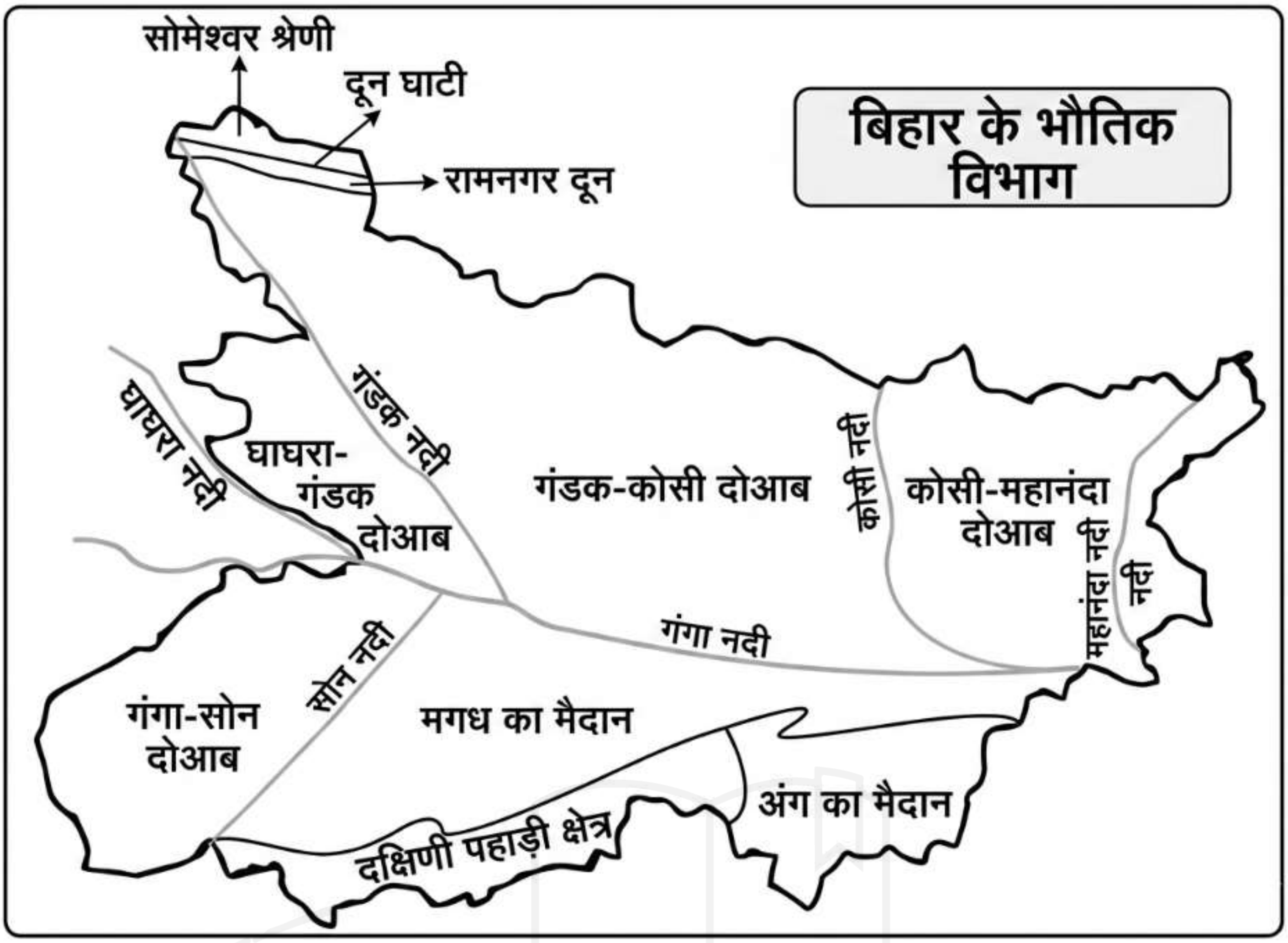

B. बिहार (सिंधु-गंगा) का मैदान

- ✓ **आकार:** यह मैदान **90,650 वर्ग किलोमीटर** के क्षेत्र में फैला हुआ है। यह भारत के सबसे बड़े मैदानों में से एक है और हिमालय से लेकर छोटा नागपुर पठार तक विस्तृत है।
- ✓ **निर्माण:** इस मैदान का निर्माण **गंगा और उसकी सहायक नदियों** द्वारा लाए गए अवसादों के जमाव से हुआ है। यह राज्य के कुल क्षेत्रफल का लगभग **96.7%** हिस्सा है।
- ✓ यह आंशिक रूप से **टेथिस सागर** की तलहटी है, जिसे हिमालय और छोटा नागपुर पठार से आने वाली नदियों ने अपने निक्षेपों से भर दिया है।
- ✓ **भौगोलिक सीमाएँ:** यह उत्तर में नेपाल सीमा से **150 किमी चौड़ी पट्टी** और दक्षिण में **छोटा नागपुर पठार** द्वारा घिरा हुआ है।
- ✓ **बिहार का मैदान:** यह हिमालय और छोटा नागपुर पठार से लाए गए जलोढ़ निक्षेपों द्वारा निर्मित है। यह बिहार का मुख्य केंद्र है और राज्य के अधिकांश भाग को कवर करता है।
- ✓ इसकी स्थलाकृति **उत्तर में सपाट** है, जबकि **दक्षिण में गया, राजगीर और खड़गपुर** की पहाड़ियों के अवशेष पाए जाते हैं।
- ✓ इसका ढाल **पश्चिम से पूर्व** की ओर है। यह पूर्वी भाग की तुलना में **पश्चिमी भाग में अधिक चौड़ा** है।
- ✓ इसका औसत ढाल **5-6 सेमी प्रति किमी** है। इसकी औसत ऊँचाई **75 मीटर से 120 मीटर** के बीच है और औसत गहराई **1000 मीटर से 1500 मीटर** तक है।

i. उत्तरी बिहार का मैदान / उत्तरी गंगा का मैदान

स्थान और विशेषताएं:

- ✓ उत्तरी बिहार का मैदान गंगा नदी के उत्तर में स्थित है और **56,980 वर्ग किलोमीटर** में फैला हुआ है। इसमें तिरहुत**, सारण, पूर्णिया, दरभंगा और कोसी** जैसे प्रमंडल शामिल हैं।

- ✓ यह मैदान पश्चिम में **घाघरा-गंडक दोआब** से लेकर पूर्व में **महानंदा घाटी** तक फैला है।
- ✓ इस मैदान का निर्माण **गंडक, घाघरा, बूढ़ी गंडक, कोसी और** महानंदा जैसी नदियों के जलोढ़ निक्षेपों से हुआ है।

स्थलाकृति:

- ✓ मैदान का उत्तरी भाग ऊँचा है जिसका निर्माण गंडक, बूढ़ी गंडक और महानंदा जैसी नदियों के **जलोढ़ पंखों** से हुआ है। ये नदियाँ अपना मार्ग बदलने के लिए जानी जाती हैं।
- ✓ पूर्वी और पश्चिमी चंपारण जिले में उत्तरी बिहार के मैदान के उत्तर-पश्चिमी भाग को **तराई क्षेत्र** के रूप में जाना जाता है जो ऊँचाई पर स्थित है।
- ✓ इस क्षेत्र की मिट्टी **पथरीली और रंध्रयुक्त** है, जिसमें रिसाव का स्तर अधिक होता है, जिसके परिणामस्वरूप जल स्तर ऊँचा बना रहता है। तराई क्षेत्र में **साल के जंगल** और लंबी ईख जैसी घास पाई जाती है। तराई के दक्षिण में दलदली भूमि है।

  महत्वपूर्ण विशेषताएं:
  - **चौर:** ये परित्यक्त नदी धाराओं द्वारा निर्मित **गोखुर झीलें** होती है जो बेगूसराय, समस्तीपुर, सहरसा और कटिहार जिलों में पाई जाती हैं।
  - यह मैदान कई **दोआबों** में विभाजित है जैसे: **घाघरा-गंडक दोआब, गंडक-कोसी दोआब और कोसी-महानंदा दोआब**।
  - **दियारा:** दशकों से रेत और जलोढ़ मिट्टी के जमाव से निर्मित भूमि भी इस मैदान की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

बाढ़ प्रवण क्षेत्र:

- ✓ यहाँ बाढ़ एक बड़ी समस्या है क्योंकि लगभग **76% क्षेत्र बाढ़ प्रवण** है।

उत्तरी बिहार के मैदान का विभाजन

- ➢ **अपवाह तंत्र के आधार पर:**
  - ✓ **महानंदा का मैदान:**
    - **स्थान:** उत्तरी बिहार के **पूर्वी भाग** में स्थित यह क्षेत्र महानंदा नदी से प्रभावित है और जलोढ़ निक्षेपों से समृद्ध है।
    - कोसी और महानंदा नदियाँ अपने साथ भारी मात्रा में **रेत और कंकड़** लेकर आती हैं और उन्हें अपने तल तथा बाढ़ के मैदानों में जमा कर देती हैं। इससे कुछ क्षेत्र अपेक्षाकृत ऊँचे हो जाते हैं, जबकि जहाँ यह जमाव कम होता है, वहाँ निचले क्षेत्र बन जाते हैं।
    - इस मैदान का ढाल **उत्तर से दक्षिण** की ओर है। यह उत्तरी बिहार के मैदान के लगभग **दसवां हिस्सा** है।
  - ✓ **कोसी का मैदान:**
    - **क्षेत्र:** यह उत्तर में **नेपाल**, दक्षिण में **महानंदा मैदान** और पश्चिम में **कमला नदी** से घिरा हुआ है।
    - यह बिहार के **सुपौल, सहरसा, मधुबनी, दरभंगा और मधेपुरा** जिलों को कवर करता है। इस मैदान का ढाल **उत्तर से दक्षिण** की ओर है। यह उत्तरी बिहार के मैदानों के लगभग **छठे हिस्से** में फैला है।
    - **मार्ग परिवर्तन:** कोसी नदी अपना मार्ग बदलने के लिए जानी जाती है। यह पश्चिम की ओर स्थानांतरित हो गई है, जिससे यह राज्य का **सर्वाधिक बाढ़ प्रवण क्षेत्र** बन गया है।
  - ✓ **कमला का मैदान:**
    - **क्षेत्र:** यह उत्तरी बिहार के मध्य भाग में स्थित है जो उत्तर में नेपाल, पूर्व में **कोसी मैदान** और दक्षिण में **गंगा** से घिरा है।
    - **मार्ग परिवर्तन:** कमला नदी अपना मार्ग बदलने के लिए जानी जाती है, जिससे कई **'चौर'** (निचले क्षेत्र) बन जाते हैं।
  - ✓ **बागमती का मैदान:**
    - **क्षेत्र:** पश्चिम में **गंडक मैदान** और पूर्व में **कमला मैदान** के बीच स्थित है। यह **सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, सहरसा और शिवहर** जैसे जिलों में फैला हुआ है।
    - बागमती नदी की महत्वपूर्ण सहायक नदियाँ **लाल बकैया, लखनदेई और अधवारा** हैं।

- **विशेषताएं:** इस मैदान में परित्यक्त नदी मार्गों द्वारा निर्मित कई **दलदली भूमियाँ** पाई जाती हैं।

✓ **गंडक का मैदान:**

- **क्षेत्र:** यह **घाघरा मैदान और बागमती मैदान** के बीच स्थित है। गंडक नदी **वाल्मीकिनगर** के पास उत्तरी बिहार के मैदान में प्रवेश करती है।
- **नदी का विस्थापन:** गंडक नदी अपना मार्ग बदलती रहती है, जिससे **'चौर'** (निचले क्षेत्र) बनते हैं।

✓ **घाघरा का मैदान:**

- **क्षेत्र:** यह उत्तरी बिहार के मैदान का **सबसे पश्चिमी हिस्सा** है, जो **सीवान, गोपालगंज और सारण** जैसे जिलों को कवर करता है।
- **विशेषताएं:** यह **घाघरा-गंडक अंतःक्षेत्र** का हिस्सा है और इसे **'सरवन का मैदान'** के रूप में जाना जाता है। इसमें भी कई **चौर** हैं और यह नदी मार्ग परिवर्तन के प्रति संवेदनशील है।
- इस मैदान में मांझी, एकमा, गियासपुर और बरौली अपने महत्वपूर्ण चौरों के लिए जाने जाते हैं।

उत्तरी गंगा के मैदान का वितरण

✓ बिहार में **उत्तरी गंगा का मैदान** भौगोलिक और कृषि दोनों ही दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है। इसे **क्षेत्रीय विविधताओं, स्थलाकृति और जल निकासी प्रणालियों** के आधार पर विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है:

a. भाबर क्षेत्र

- भाबर क्षेत्र बिहार के उत्तरी भाग में स्थित है और **निम्न हिमालय** तथा **शिवालिक पहाड़ियों** के दक्षिण में स्थित है।
- **विशेषताएं:** यह पश्चिम से पूर्व तक फैली लगभग **10 किमी चौड़ी** एक संकीर्ण पट्टी है। यह क्षेत्र अपने **रेत और कंकड़** के निक्षेपों के लिए जाना जाता है।
- **विस्तार:** यह क्षेत्र 7 **जिलों** में फैला हुआ है जिनमें **पूर्वी चंपारण, पश्चिम चंपारण, सीतामढ़ी, सुपौल, मधुबनी, किशनगंज और अररिया** शामिल हैं।

b. बांगर क्षेत्र

- यह बिहार के **उत्तर-पश्चिमी भाग** में स्थित है।
- **विशेषताएं:** इस क्षेत्र में **पुरानी जलोढ़ मृदा** पाई जाती है जो आमतौर पर बाढ़ से मुक्त रहती है।
- **विशेषताएं:** यह भूमि आमतौर पर अधिक **ऊँची** होती है, जिससे यहाँ बाढ़ आने की संभावना कम होती है और यह कृषि के लिए उपजाऊ मृदा प्रदान करती है।

c. खादर क्षेत्र

- यह क्षेत्र बिहार में नदी के किनारों और **निचले इलाकों** के पास स्थित है।
- **विशेषताएं:** इस क्षेत्र में **नवीन जलोढ़ मृदा** होती है, जो हर साल बाढ़ के पानी द्वारा लाए गए नदी के अवसादों और **गाद** से जमा होती है। यह मिट्टी पोषक तत्वों से भरपूर होती है और कृषि में सहायक है।
- **विस्तार:** यह क्षेत्र उत्तर और उत्तर-पूर्वी मैदान में पश्चिम में **गंडक** से लेकर पूर्व में **कोसी** तक फैला हुआ है।

d. चौर (मन) क्षेत्र

- यह क्षेत्र बिहार के उत्तर और उत्तर-पूर्वी हिस्सों में, विशेष रूप से गंडक से कोसी तक की नदियों के किनारे फैला हुआ है।
- **विशेषताएं:** चौर क्षेत्र **गोखुर झीलों** और नदियों के परित्यक्त मार्गों द्वारा निर्मित निचले क्षेत्र होते हैं, जो ताजे और गहरे पानी का स्रोत होते हैं।
- **प्रमुख चौर:** इनमें मुख्य रूप से **लखनी चौर** (पश्चिम चंपारण), **सुंदरपुर चौर** (पूर्वी चंपारण), **तेतरिया चौर** (पश्चिम चंपारण), **माधोपुर मन** और **सरैया मन** शामिल हैं। ये क्षेत्र जल स्रोतों से समृद्ध हैं और कृषि एवं जल संचयन के लिए उपयोग किए जाते हैं।
- राजमहल पहाड़ियाँ और कैमूर पठार क्रमशः इसके उत्तर-पूर्व और उत्तर-पश्चिम में इसकी सीमा निर्धारित करते हैं जो गंगा नदी के दक्षिण

से लेकर छोटा नागपुर पठार के उत्तर तक फैला हुआ है। ये पहाड़ियाँ बिहार के जहानाबाद, नालंदा और मुंगेर जिलों में स्थित हैं।

ii. दक्षिणी बिहार का मैदान / दक्षिणी गंगा का मैदान

- ✓ **क्षेत्र:** यह मैदान गंगा नदी के **दक्षिण** में स्थित है और उत्तरी बिहार के मैदान की तुलना में क्षेत्रफल में छोटा है। यह क्षेत्र **गंगा नदी** और **छोटा नागपुर पठार** के बीच स्थित है।
- ✓ **स्थलाकृति:** दक्षिणी बिहार का मैदान दक्षिण में अधिक ऊँचा है और इसका ढाल **गंगा नदी** की ओर है। उत्तरी बिहार के मैदान की तुलना में इस क्षेत्र का ढाल कम क्रमिक है और यहाँ बाढ़ आने की संभावना कम होती है।
- ✓ **महत्वपूर्ण विशेषताएँ:**
  - यह क्षेत्र **कर्मनाशा, सोन, पुनपुन, पयमार, फल्गु और हरोहर** जैसी नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ निक्षेपों से बना है।
  - **राजमहल की पहाड़ियाँ** और **कैमूर का पठार** उत्तर और दक्षिण बिहार के बीच की सीमा को चिन्हित करते हैं।
  - यहाँ कई पहाड़ियाँ स्थित हैं जैसे **गया की पहाड़ियाँ** (266 मीटर), **राजगीर** (466 मीटर), **बराबर, गिरियक, शेखपुरा, जमालपुर** और **खड़गपुर** (510 मीटर) की पहाड़ियाँ।

दक्षिणी बिहार के मैदान को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया गया है:

I. चंदन का मैदान :

- ✓ यह दक्षिणी बिहार के मैदान के सबसे पूर्वी भाग में स्थित है, जो बांका और भागलपुर जिलों को कवर करता है।
- ✓ इसका निर्माण राजमहल की पहाड़ियों के एक हिस्से डिगरिया पहाड़ियों से निकलने वाली चंदन नदी और उसकी सहायक नदियों द्वारा हुआ है।
- ✓ यह उत्तर में गंगा नदी, पूर्व में गोड्डा, दक्षिण में देवघर और पश्चिम में जमुई से घिरा है।
- ✓ इसका उत्तरी भाग उपजाऊ मिट्टी से आच्छादित है; दक्षिणी भाग उबड़-खाबड़ और वनाच्छादित है।
- ✓ यह दक्षिणी बिहार के मैदान के लगभग दसवें हिस्से को कवर करता है और इसका ढाल दक्षिण से उत्तर की ओर है।

II. क्यूल का मैदान :

- ✓ यह चंदन मैदान के पश्चिम में, मोकामा टाल क्षेत्र के पूर्व में और चकई पठार के उत्तर में स्थित है।
- ✓ इसमें **झाझा, सिकंदरा, लक्ष्मीपुर, पतंदा और माझींवा** विकास खंड जैसे क्षेत्र शामिल हैं।
- ✓ इसका दक्षिणी भाग लहरदार है और इसमें चकई, सिमुलतला, गोडई और विशुनपुर जैसे क्षेत्र आते हैं।
- ✓ उत्तरी भागों में **उपजाऊ मिट्टी** है, जबकि दक्षिणी भागों में **मोटी (कंकड़-पत्थर युक्त) मिट्टी** पाई जाती है।
- ✓ उत्तर में गंगा नदी की उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी स्थित है और **खड़गपुर की पहाड़ियाँ** क्यूल नदी (पश्चिम) और मान नदी (पूर्व) के बीच एक **जल विभाजक** बनाती हैं।

III. टाल क्षेत्र :

- ✓ यह एक **निचला क्षेत्र** है जहाँ मानसून के मौसम में जलभराव की समस्या रहती है।
- ✓ यह गंगा नदी के ऊँचे तटबंध के दक्षिण में, क्यूल मैदान के पश्चिम में और मध्य दक्षिण बिहार के मैदान के पूर्व में स्थित है।
- ✓ यह **पटना से मोकामा** तक लगभग 25 किमी के क्षेत्र में फैला है।

मोकामा टाल :

- ➢ विस्तार: यह फतुहा से लखीसराय तक फैला हुआ है, जिसे बिहार की 'बीमारी' के रूप में जाना जाता है।
- ➢ क्षेत्रफल: लगभग 1,06,200 हेक्टेयर भूमि, जो निचले इलाके में स्थित है और मानसून के दौरान वर्षा जल से भर जाती है।
- ➢ निर्माण: इसका निर्माण दक्षिणी पहाड़ियों से नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ से हुआ है।
- ➢ नदियाँ: पुनपुन, पयमार और फल्गु जैसी नदियाँ गंगा नदी में मिलती हैं, जो इस क्षेत्र के जल निकाय में योगदान देती हैं।

IV. मध्य दक्षिण बिहार का मैदान :

- ✓ आकार: यह एक त्रिकोणीय आकार का मैदान है, जिसे मगध के नाम से भी जाना जाता है। यह उत्तर में गंगा नदी, पूर्व में टाल क्षेत्र, दक्षिण में दक्षिणी पहाड़ी इलाके और पश्चिम में सोन नदी से घिरा है।
- ✓ इसकी दक्षिण में कोई स्पष्ट सीमा नहीं है, लेकिन पहाड़ी इलाका इसकी दक्षिणी सीमा बनाता है।
- ✓ विस्तार: इसमें गया, जहानाबाद, औरंगाबाद, पटना, नालंदा और नवादा जैसे जिले शामिल हैं।
- ✓ निर्माण: इसका निर्माण गंगा नदी, पुनपुन, सोन और फल्गु नदी की सहायक नदियों द्वारा हुआ है।
- ✓ इस मैदान का ढाल दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर है।
- ✓ इसे चार उप-विभाजनों में बांटा गया है: गंगा का बाढ़ क्षेत्र, उससे सटा निचला इलाका, पुराना जलोढ़ (बांगर) और हल्की लहरदार ऊँची भूमि।

V. शाहाबाद का मैदान :

- ✓ **स्थान:** यह दक्षिणी बिहार के मैदान के सबसे पश्चिमी भाग में स्थित है।
- ✓ **सीमाएं:** यह उत्तर में गंगा नदी, पूर्व में सोन नदी, दक्षिण में कैमूर के पठार और पश्चिम में कर्मनाशा नदी से घिरा हुआ है।
- ✓ **विस्तार:** यह भोजपुर, बक्सर और कैमूर जिलों के कुछ हिस्सों को कवर करता है।
- ✓ इसका निर्माण गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों जैसे कर्मनाशा और सोन द्वारा हुआ है।
- ✓ इसे **दो भागों** में बांटा गया है:
  - **पहला भाग:** यह गंगा नदी और पूर्वी रेलवे की मुख्य लाइन के बीच स्थित है। यह गंगा के जलोढ़ के कारण उपजाऊ मिट्टी वाला बाढ़ प्रवण क्षेत्र है।
  - **दूसरा भाग:** यह रेलवे के दक्षिण में स्थित है, जो कैमूर पठार की तलहटी तक फैला है। यह लगभग 5,700 वर्ग किमी के क्षेत्र को कवर करता है और यह भी एक समतल जलोढ़ मैदान है।

नोट: पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में स्थित **मध्य गंगा के मैदान** में **जलभृतों** की औसत गहराई लगभग **1,000 से 2,000 मीटर** है।

C. दक्षिणी संकीर्ण पठार

- ✓ यह दक्षिणी बिहार के मैदान के **सुदूर दक्षिण** में स्थित है, जो **छोटा नागपुर पठार** की सीमा को चिन्हित करता है।
- ✓ यह पश्चिम में **कैमूर जिले** से लेकर पूर्व में **मुंगेर और बांका** जिलों तक फैली एक संकीर्ण पट्टी है।
- ✓ यह **नीस, शिस्ट और ग्रेनाइट** जैसी कठोर चट्टानों से बना है।
- ✓ यह बिहार के सबसे पुराने हिस्सों में से एक है और **प्रायद्वीपीय पठार** का हिस्सा है।
- ✓ इसे निम्नलिखित भागों में विभाजित किया गया है:

I. कैमूर/रोहतास का पठार :

- यह **1,200 वर्ग किमी** में फैला है जो मुख्य रूप से कैमूर जिले में है।
- इसकी ऊँचाई **300 मीटर से 450 मीटर** तक है, जिसमें उच्चतम बिंदु **रोहतासगढ़** समुद्र तल से **495 मीटर** ऊपर है।
- यह **विंध्यन चट्टानों** से बना है और विंध्य श्रेणी का हिस्सा है।

II. गया पहाड़ी क्षेत्र :

- यह **गया, औरंगाबाद और नवादा** जिलों के दक्षिणी भाग में स्थित है।
- यह एक उच्च और बंजर क्षेत्र है जो अधिक खेती के लिए उपयुक्त नहीं है।
- यह पुरानी, पत्रित चट्टानों (**नीस, क्रिस्टलीय चट्टानें**) से बना है।
- **महत्वपूर्ण पहाड़ियाँ:**
  - ☞ **गिद्धौर पहाड़ियाँ:** गया और नवादा की दक्षिणी सीमा बनाती हैं।
  - ☞ **गंजास, भिंडास और जेठियन:** बोधगया से फैली लंबी, कम ऊँचाई वाली पर्वतमालाएँ।
  - ☞ **उल्लेखनीय चोटियाँ:** माहीर पहाड़ी (482 मीटर), बायारी पहाड़ (408 मीटर) और तरही पहाड़ (357 मीटर)।

III. नवादा का पहाड़ी क्षेत्र :

- यह उत्तर में गंगा नदी से लेकर नवादा जिले के दक्षिणी भाग तक स्थित है।
- इसमें छोटा नागपुर पठार से निकली पहाड़ियाँ और श्रेणियाँ हैं, जो छोटी घाटियों द्वारा अलग होती हैं।
- **महत्वपूर्ण पहाड़ियाँ: सृंगिरिखी (555 मीटर), दुर्वासा ऋषि (661 मीटर)** और **महाबर पहाड़ी (549 मीटर)**।
- यह क्षेत्र **मोहना और ककोलत** जैसे जलप्रपातों के लिए जाना जाता है।

IV. राजगीर पहाड़ी क्षेत्र :

- यह मध्य दक्षिण बिहार के मैदान में स्थित है और **गया की पहाड़ियों** का ही विस्तारित हिस्सा है।
- पहाड़ी श्रृंखलाएँ बोधगया से गिरियक के पास तक फैली हुई हैं।
- ये समानांतर श्रेणियाँ राजगीर शहरी केंद्र के दक्षिण में चौड़ी हो जाती हैं, जो **प्राचीन राजगीर की घाटी** को घेरे हुए हैं।

V. मुंगेर पहाड़ी क्षेत्र :

- यह बिहार के दक्षिणी भाग में **जमुई और मुंगेर** जिलों में स्थित है।
- इसकी विशेषता कम ऊँचाई वाली श्रेणियाँ और **खड़गपुर पहाड़ियों** जैसी अलग-थलग चोटियाँ हैं।
- खड़गपुर पहाड़ियाँ सबसे विस्तृत श्रृंखला बनाती हैं और **जमालपुर से जमुई रेलवे स्टेशन** तक फैली हुई हैं।
- क्षेत्र की अन्य पहाड़ियों में **गिधेश्वर पहाड़ियाँ, सतभरी पहाड़ी** और कछू के पास **चकई का पठार** शामिल हैं।
- यह क्षेत्र मुख्य रूप से पहाड़ियों और जंगलों से घिरा हुआ है।

बिहार के भौगोलिक क्षेत्र

बिहार को जलवायु, मृदा, वनस्पति और सामाजिक-सांस्कृतिक तत्वों के आधार पर **10 भौगोलिक क्षेत्रों** में विभाजित किया गया है:

1. तराई क्षेत्र :

- ✓ यह बिहार का सबसे अधिक वर्षा वाला क्षेत्र है, जो राज्य के उत्तर-पश्चिम में स्थित है।
- ✓ यह दलदली और घने जंगलों वाला क्षेत्र है जहाँ धान, जूट और गन्ना की खेती की जाती है।
- ✓ यहाँ की भूमि विषम है और यहाँ अस्थायी बस्तियाँ पाई जाती हैं।

2. घाघरा-गंडक दोआब :

- ✓ यह एक जलोढ़ मैदान क्षेत्र है जो सारण, सीवान और गोपालगंज जिलों में स्थित है।
- ✓ यहाँ 120 सेमी वर्षा होती है, जो गन्ने की खेती के लिए उपयुक्त है।

3. गंडक-कोसी दोआब :

- ✓ यह सीतामढ़ी, शिवहर, बेगूसराय, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, वैशाली और मधुबनी जिलों को कवर करता है।
- ✓ इस क्षेत्र में चीनी उद्योग, फल प्रसंस्करण उद्योग और डेयरी उद्योग अच्छी तरह विकसित हैं।

4. कोसी-महानंदा दोआब :

- ✓ यह मधुबनी, सहरसा, खगड़िया, किशनगंज, अररिया और पूर्णिया में फैला हुआ है।
- ✓ अत्यधिक वर्षा के कारण यह क्षेत्र बाढ़ प्रवण है; यहाँ विकसित उद्योगों और परिवहन का अभाव है।

Toppers Notes
Unleash the topper in you

5. **कर्मनाशा-सोन दोआब**

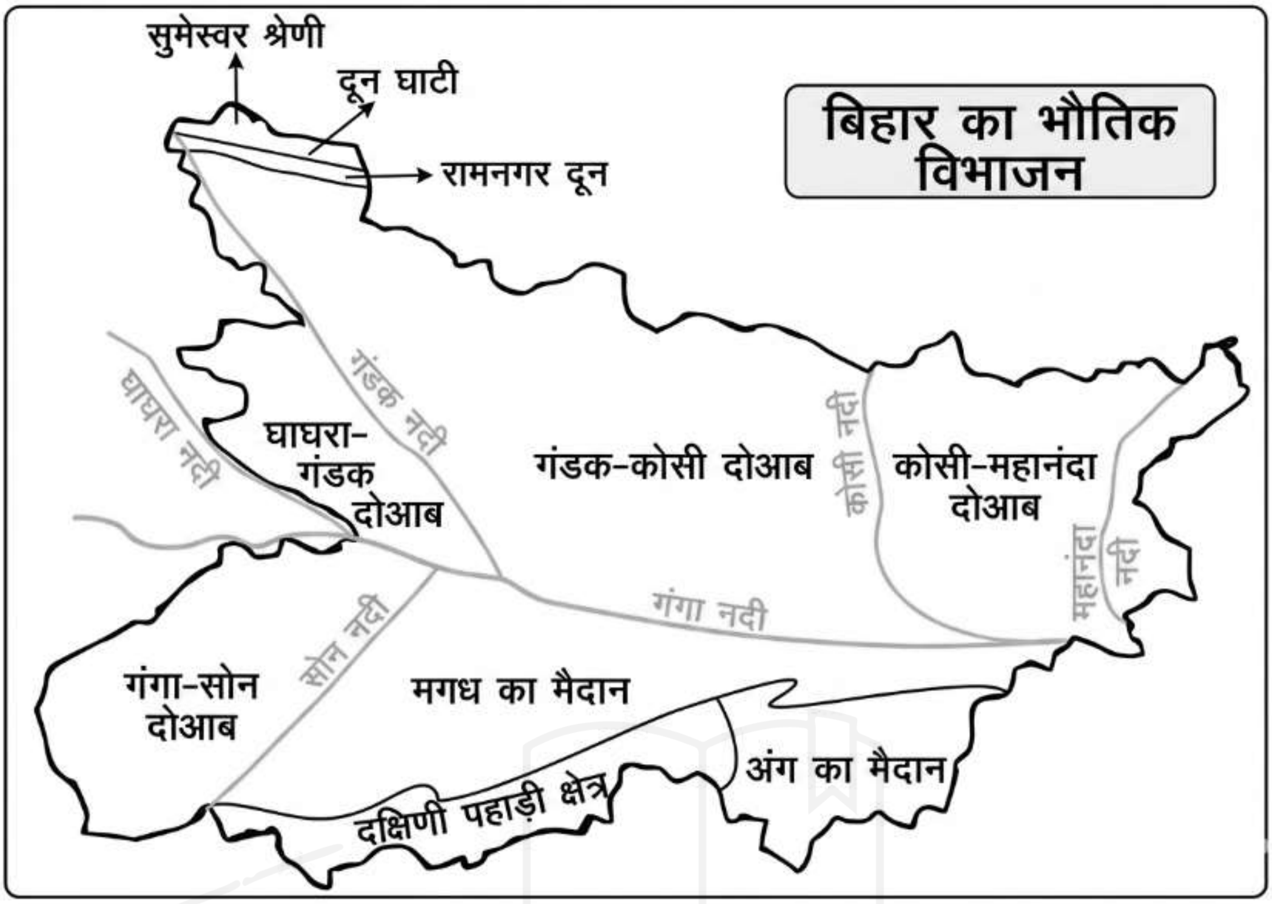

- ✓ **स्थान:** यह भोजपुर, कैमूर और बक्सर जिलों में स्थित है।
- ✓ यहाँ कम वर्षा होती है और सिंचाई मुख्य रूप से नहरों के माध्यम से की जाती है।
- ✓ धान की फसल यहाँ व्यापक रूप से उगाई जाती है, जो चावल मिलों को सहायता प्रदान करती है।

6. **सोन-क्यूल दोआब**

- ✓ इसमें दक्षिण बिहार के जिले जैसे पटना, जहानाबाद, अरवल, नालंदा, गया और औरंगाबाद शामिल हैं।
- ✓ यह क्षेत्र अक्सर सूखे से प्रभावित रहता है।
- ✓ यह क्षेत्र रेशम-वस्त्र, सीमेंट, तेल उद्योग और हस्तशिल्प उद्योगों के लिए जाना जाता है।

7. **पूर्वी-मध्य बिहार का मैदान**

- ✓ यह भागलपुर, मुंगेर और बांका जिलों को कवर करता है।
- ✓ यह कृषि और उद्योग के मामले में बहुत विकसित नहीं है।
- ✓ भागलपुर में रेशम वस्त्र उद्योग विकसित है और मुंगेर में डेयरी उद्योग विकसित है।

8. **गंगा-दियारा क्षेत्र**

- ✓ दियारा भूमि का निर्माण गंगा नदी के बाढ़ के पानी के उतरने के बाद होता है और यह प्रतिवर्ष बाढ़ के बाद बनती है।
- ✓ यह रबी फसलों और सब्जी की खेती के लिए जाना जाता है।
- ✓ इसका विस्तार बक्सर, भोजपुर, सारण, वैशाली, समस्तीपुर, बेगूसराय, मुंगेर, पटना, लखीसराय, भागलपुर और कटिहार जैसे जिलों में है।

9. **कैमूर का पठार**

- ✓ यह बिहार के दक्षिण-पश्चिम जिलों (कैमूर और रोहतास) में स्थित है।
- ✓ यह पत्थर आधारित उद्योगों और खनन गतिविधियों के लिए जाना जाता है।
- ✓ आमझोर क्षेत्र में पायराइट्स सल्फर उद्योग है, जबकि बंजारी क्षेत्र में चूना पत्थर आधारित सीमेंट का उत्पादन होता है।

10. अभ्रक क्षेत्र

- ✓ यह मुंगेर, जमुई, गया और नवादा जिलों में पाया जाता है।
- ✓ अभ्रक मुख्य रूप से बलथर मिट्टी में पाया जाता है।
- ✓ इस क्षेत्र में इमारती लकड़ी, रेशम और लाख उद्योग भी स्थित हैं।

बिहार की महत्वपूर्ण पर्वत चोटियाँ/ पहाड़ियाँ :

शिखर/चोटी	ऊँचाई (मीटर में)
सोमेश्वर किला	880
वैभवगिरी पहाड़ी	661
प्रेतशिला पहाड़ी	555
मंदराचल पर्वत	549
राजगीर की पहाड़ियाँ	542
ब्रह्मयोनि पहाड़ी	510
मोहन पहाड़ी	482
कारो पहाड़ी	466
कैमूर की पहाड़ियाँ	447
ककोल पहाड़ी	441
वसुमती पहाड़ी	408
मुरली पहाड़ी	358
दाने पर्वत	357
रोहतासगढ़ पहाड़	343
कैमूर की पहाड़ियाँ	343
गिरियक पहाड़ी	334
विष्णुपद पहाड़	320
बलथरवा पहाड़	313
बरबर पहाड़	307
ब्रह्मा पहाड़	300
राम पहाड़	300
गिद्ध पहाड़	281
उदय पहाड़	275
चौपारण पहाड़	269
कोहबर पहाड़ी	262
उदयगिरि पहाड़ी	238
उधवा पहाड़ी	231
मेनार पहाड़	222
जठरवा पहाड़ी	214
केशव पहाड़	136
विहार पहाड़/गंधमादन	108

2 अध्याय

बिहार की जलवायु और मृदा

बिहार समशीतोष्ण क्षेत्र के उपोष्णकटिबंधीय भाग में स्थित है, जो 23½° से 40° उत्तरी अक्षांश के बीच फैला हुआ है। यहाँ महाद्वीपीय मानसूनी और आर्द्र-उपोष्णकटिबंधीय प्रकार की जलवायु पाई जाती है।

जलवायु को प्रभावित करने वाले मुख्य भौगोलिक कारक:

- **कर्क रेखा से निकटता:** इसके परिणामस्वरूप ग्रीष्म ऋतु में अत्यधिक गर्मी होती हैं, जहाँ तापमान **45°C** से अधिक हो जाता है।
- **बिहार का उत्तरी भाग:** हिमालय से निकटता के कारण यह दक्षिणी भाग की तुलना में अधिक ठंडा रहता है।
- **गंगा डेल्टा और असम:** ये विशेष रूप से मानसून पूर्व अवधि में जलवायु में योगदान देते हैं।
- **बंगाल की खाड़ी और मानसून:** दक्षिण-पश्चिम मानसून और बंगाल की खाड़ी के प्रभाव से यहाँ वर्षा होती है, विशेष रूप से पूर्वी बिहार में।

मौसम और ऋतुएँ:

- पूर्वी बिहार में आर्द्र जलवायु के कारण अधिक वर्षा होती है, जबकि पश्चिमी बिहार तुलनात्मक रूप से शुष्क है।
- बंगाल की खाड़ी से उत्पन्न निम्नदाब प्रणालियाँ इस क्षेत्र को प्रभावित करती है और यहाँ आर्द्रता का कारण बनती हैं।

जलवायु वर्गीकरण:

- कोपेन वर्गीकरण के अनुसार, बिहार की जलवायु मानसून प्रकार की है, जिसमें **शीत ऋतु ठंडी और शुष्क** होती हैं (Cw)।
- **ट्रेवर्था** और **थॉर्नथवेट** के वर्गीकरण के अनुसार, यह **उपोष्णकटिबंधीय आर्द्र जलवायु** के अंतर्गत आता है।

बिहार में ऋतुएँ:

ऋतु	समय अवधि	प्रमुख विशेषताएँ
1. ग्रीष्म ऋतु	मार्च से मई	➢ अप्रैल और मई के महीनों में गर्म हवाएँ (लू) चलती हैं। ➢ इस अवधि में औसत तापमान पूर्व एवं उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में 29°C से 32°C के बीच रहता है तथा मई महीने में यह 45°C तक पहुँच जाता है। ➢ गया बिहार का सर्वाधिक गर्म स्थान माना जाता है। ➢ इस ऋतु में औसत वर्षा लगभग 127 मिमी होती है।
2. दक्षिण-पश्चिम मानसून	जून से सितंबर	➢ मानसून का आगमन जून महीने में होता है और पूर्वी बिहार में 7 जून के आसपास वर्षा की तीव्रता अधिक हो जाती है। ➢ पूर्वी बिहार क्षेत्र में लगभग 254 मिमी वर्षा प्राप्त होती है। ➢ चक्रवाती तूफान इस दौरान तीव्र वर्षा लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
3. लौटता हुआ दक्षिण-पश्चिम मानसून	अक्टूबर से नवंबर	➢ इस अवधि में दक्षिण-पश्चिम मानसून का क्रमशः वापस लौटना प्रारम्भ हो जाता है। ➢ इस ऋतु को ‘शरद ऋतु’ के नाम से जाना जाता है।

		➢ उत्तर-पश्चिमी शुष्क हवाओं के प्रभाव से वातावरण में शुष्क परिस्थितियाँ विकसित हो जाती हैं।
4. शीत ऋतु	दिसंबर से फरवरी	➢ इस ऋतु में तापमान कम हो जाता है और आकाश सामान्यतः साफ रहता है। ➢ जनवरी वर्ष का सबसे ठंडा महीना होता है, जिसमें तापमान लगभग 4°C तक गिर सकता है। ➢ बिहार के दक्षिण-पूर्वी भाग में इस समय पाला पड़ने की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

बिहार में वर्षा वितरण का स्वरूप

वर्षा वितरण	क्षेत्र	विवरण
कुल वार्षिक वर्षा	संपूर्ण बिहार	- औसत वर्षा: 120 सेमी होती है। - अधिकांश वर्षा जून से अक्टूबर के बीच होती है। - पश्चिमी क्षेत्र में लगभग 100 सेमी वर्षा होती है। - उत्तरी क्षेत्र में 200 सेमी से अधिक वर्षा होती है।
पूर्वी एवं उत्तर-पूर्वी बिहार	किशनगंज, पूर्णिया, कोसी	- यहाँ 200 सेमी से अधिक वर्षा होती है। - राज्य में सर्वाधिक वर्षा इसी क्षेत्र में होती है।
पश्चिमी बिहार	गया, नालंदा, जहानाबाद, औरंगाबाद	- यहाँ अपेक्षाकृत कम वर्षा होती है।

बिहार की मृदाएँ

➢ मृदा खनिज और जैविक घटकों का मिश्रण है जो पौधों की वृद्धि का आधार होती है। मृदाइसका निर्माण जनक चट्टानों के टूटने या उनमें होने वाले भौतिक और रासायनिक परिवर्तनों से होता है। मृदा के निर्माण में जलवायु भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

➢ बिहार में उच्चावच, वर्षा, वनस्पति और जनक चट्टानों में भिन्नता के कारण विभिन्न प्रकार की मृदा पाई जाती है। बिहार में जलोढ़ मृदा व्यापक रूप से पाई जाती है, जो कुल क्षेत्रफल का लगभग 90% है। इस मृदा का निर्माण गंगा नदी के उत्तरी और दक्षिणी मैदानों में नदियों द्वारा जमा किए गए अवसादों से हुआ है।

➢ बिहार कृषि अनुसंधान संस्थान ने जनक चट्टानों, स्थलाकृति, नमी, और भौतिक एवं रासायनिक गुणों जैसी विशेषताओं के आधार पर बिहार की मृदा को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है।

बिहार में मृदा के प्रकार

बिहार की मृदा को मुख्य रूप से निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

1. उत्तरी मैदान की मृदा
2. दक्षिणी मैदान की मृदा
3. दक्षिणी पठार की मृदा

1. उत्तरी मैदान की मृदा -

(i) पीडमोंट दलदली मृदा:

✓ यह मृदा उथली से लेकर गहरी होती है, मुख्य रूप से दोमट और जैविक पदार्थों से भरपूर होती है। इसका रंग हल्का भूरा या पीला होता है और प्रकृति में यह थोड़ी अम्लीय होती है।

✓ यह धान, मक्का और जौ जैसी फसलों की वृद्धि में सहायक है और इस क्षेत्र की कृषि गतिविधियों के लिए उपयुक्त है।

✓ **स्थान:** यह **पश्चिम चंपारण** के **उत्तर-पश्चिमी** भाग और **सोमेश्वर पहाड़ियों** (किशनगंज क्षेत्र के पास) में पाई जाती है।

(ii) तराई मृदा:

- ✓ यह मृदा उपजाऊ होती है और धान, गन्ना, जूट, सब्जियां और तिलहन सहित विभिन्न प्रकार की फसलों के लिए उपयुक्त है।
- ✓ इसकी बनावट रेतीली से लेकर दोमट तक होती है जो जल निकासी की अच्छी सुविधा प्रदान करती है और यह आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर होती है।
- ✓ **स्थान: बिहार के उत्तरी हिस्सों** में, यह मुख्य रूप से **नेपाल सीमा** के साथ-साथ पाया जाता है और सोमेश्वर श्रेणी तक फैला हुआ है।

(iii) जलोढ़ मृदा:

- ✓ यह मृदा बहुत उपजाऊ होती है, जिसमें रेतीले, दोमट और मृदा के अंश होते हैं। इसमें फास्फोरस और नाइट्रोजन पर्याप्त मात्रा में होता है, जो फसल उत्पादन में मदद करता है।
- ✓ यहाँ उगाई जाने वाली प्रमुख फसलों में धान, मक्का, दालें और तिलहन शामिल हैं।
- ✓ **स्थान:** यह **पूर्णिया, सुपौल, अररिया** और बिहार के **उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के अन्य जिलों (किशनगंज सहित)** में पाई जाती है।

(iv) दोमट मृदा :

- ✓ इस मृदा का रंग आम तौर पर हल्का जैतूनी या गहरा भूरा होता है। इसकी उर्वरता मध्यम से उच्च होती है और यह मक्का, धान, गेहूं और गन्ना जैसी फसलों के लिए उपयुक्त है।
- ✓ बिहार के पूर्वी हिस्से, विशेष रूप से **सीवान, गोपालगंज, वैशाली और सारण**, मुख्य रूप से दोमट मृदा से ढके हुए हैं।
- ✓ बिहार के पूर्वी और पश्चिमी हिस्सों में इसकी बनावट और रासायनिक संरचना अलग-अलग होती है।

बिहार की मृदा की मुख्य विशेषताएं:

- ✓ **पुरानी जलोढ़ या बांगर मृदा:** यह मुख्य रूप से बिहार के **पश्चिमी भाग** (घाघरा-गंडक दोआब और बूढ़ी गंडक क्षेत्र) में पाई जाती है। यह मृदा चूने और मृदा से भरपूर होती है और गन्ना, तंबाकू तथा धान जैसी फसलों के लिए उपयुक्त है।
- ✓ **नवीन जलोढ़ या खादरमृदा:** यह **बाढ़ प्रवण क्षेत्रों** में पाई जाती है। यह मृदा हल्की होती है और **गेहूं, धान तथा गन्ना** जैसी फसलों के लिए बेहतर है। **गंगा, गंडक और कोसी** जैसी नदियों के किनारों पर समय-समय पर होने वाले जमाव के कारण यह अधिक उपजाऊ होती है।

2. बिहार के दक्षिणी मैदान की मृदाएँ -

मुख्य बिंदु:

स्थान और निर्माण:

a. **दक्षिणी मैदान** उत्तरी गंगा के मैदान और दक्षिणी पठार (छोटा नागपुर पठार) के बीच स्थित है।

b. इस मृदा का निर्माण **सोन, पुनपुन, फल्गु** और उनकी सहायक नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ से हुआ है।

दक्षिणी मैदान की मृदाओं के प्रकार:

1. करैल-केवाल मृदा
2. ताल मृदा
3. बलथर मृदा
4. कगारी मृदा

मृदा :-

1. **करैल-केवाल मृदा:**
   - ✓ यह मृदा **भारी और दोमट** होती है, जो आमतौर पर **टाल क्षेत्र के दक्षिण में** (उत्तरी रोहतास, उत्तरी गया, औरंगाबाद, पटना, जहानाबाद, मुंगेर, भागलपुर, भोजपुर और बक्सर सहित) पाई जाती है।
   - ✓ इसकी **प्रकृति क्षारीय** होती है और इसका रंग **गहरे भूरे से पीला** होता है।
   - ✓ यह मृदा अत्यधिक उपजाऊ है, जो चावल, गेहूं, अलसी, बाजरा, दलहन और चने की फसलों के लिए सहायक है।
   - ✓ इसमें जल सोखने की उच्च क्षमता होती है और यह **गीली धान की भूमि** या **'धनहर'** के लिए उपयुक्त है।
2. **टाल मृदा :**
   - ✓ यह **बक्सर और बांका जिलों** के बीच **गंगा** के **'बैकवाटर बेल्ट'** (पश्च जल क्षेत्र) में पाई जाती है।
   - ✓ यह नमी से भरपूर होती है और मानसून तथा खरीफ सीजन के दौरान **जलमग्न** रहती है।

- ✓ इसकी बनावट **हल्के भूरे से गहरे भूरे रंग की और मध्यम से भारी** होती है।
- ✓ यह 7 से 8 pH मान के साथ थोड़ी क्षारीय है, जो भूमि सूखने के बाद **गेहूं, खेसारी, मसूर और दालों** जैसी **रबी फसलों** के लिए उपयुक्त है।

3. **बलथर मृदा :**
   - ✓ यह **छोटा नागपुर पठार और दक्षिणी गंगा के मैदान** के **संक्रमणकालीन क्षेत्र** में पाई जाती है।
   - ✓ यह मृदा कम उपजाऊ होती है और लौह तत्व की उपस्थिति के कारण इसमें **लाल और पीले रंग** की प्रधानता होती है।
   - ✓ इसकी प्रकृति **अम्लीय** होती है, जो **मक्का, ज्वार, बाजरा और चने** जैसी फसलों के लिए उपयुक्त है।
   - ✓ यह **कैमूर के पठार** और **राजमहल की पहाड़ियों** जैसे क्षेत्रों में पाई जाती है।

4. **कगारी मृदा :**
   - ✓ यह गंगा नदी के दक्षिणी तट और **सोन, पुनपुन तथा फल्गु** नदियों के किनारों पर पाई जाती है।
   - ✓ यह मृदा **चूने से भरपूर और भूरे रंग** की होती है।
   - ✓ ये मृदा **कम उपजाऊ** होती हैं और मुख्य रूप से **दलहन** जैसी मोटी फसलों के उत्पादन में सहायक होती हैं।
   - ✓ **स्थान:** मुख्य रूप से **दक्षिण-पूर्वी बिहार** (बांका, नवादा, गया, औरंगाबाद, जमुई और मुंगेर क्षेत्रों) में पाई जाती है।

2. **कैमूर की पहाड़ियों की लाल रेतीली मृदा :**
   - ✓ यह मृदा **कैमूर श्रेणी** (पश्चिम में कैमूर से लेकर पूर्व में राजमहल की पहाड़ियों और **छोटा नागपुर पठार** के उत्तरी भाग तक) में पाई जाती है।
   - ✓ इसका **रंग हल्का पीला-लाल** होता है और प्रकृति में यह **अम्लीय** होती है।
   - ✓ यह **मक्का, जौ, सरसों और सब्जियां** उगाने के लिए उपयुक्त है।

3. **बिहार के दक्षिणी पठार की मृदा**

   मुख्य बिंदु:

   स्थान और निर्माण:
   - ✓ बिहार का **दक्षिणी पठार** एक संकीर्ण क्षेत्र है जो छोटा नागपुर पठार और उत्तरी गंगा के मैदान के बीच स्थित है।
   - ✓ यहाँ की मृदा **अवशिष्ट** है, जिसका निर्माण आग्नेय और कायांतरित चट्टानों के विखंडन से हुआ है।

   दक्षिणी पठार की मृदा के प्रकार:
   1. लाल और पीली मृदा
   2. कैमूर की पहाड़ियों की लाल रेतीली मृदा

मृदा के प्रकारों का विस्तृत विवरण:

1. **लाल और पीली मृदा:**
   - ✓ इन मिट्टियों का निर्माण **आग्नेय और कायांतरित चट्टानों** के टूटने से हुआ है।
   - ✓ **लौह तत्व** की अधिकता के कारण इनका **रंग लाल** होता है।
   - ✓ इस मृदा की उर्वरता कम है, जिससे यह केवल **बाजरा, ज्वार** और अन्य **शुष्क भूमि की फसलों** के लिए उपयुक्त है।
   - ✓ कम उपजाऊ होने के कारण, यह अधिकांश फसलों के लिए आदर्श नहीं है, लेकिन **बाजरा और ज्वार** जैसी **शुष्क फसलों** का समर्थन करती है।

बिहार की मृदा विविधतायुक्त है और ये इसकी समृद्ध कृषि क्षमता में योगदान देती है, जो विभिन्न मृदा के प्रकारों और भौगोलिक क्षेत्रों के अनुकूल फसलों की एक विस्तृत श्रृंखला का समर्थन करती है।